महानगरों की समस्याएं

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

भारत गांवों का देश है। भारत की आत्म गांवों में निवास करती है। यह कृषि प्रधान देश है। विज्ञान की प्रगति में महानगरों को बढ़ावा दिया है। विज्ञान के प्रभाव ने मानव की आवश्यकताओं को बढ़ा दिया। महानगरों की आबादी धीरे–धीरे बहुत बढ़ गयी है। गांवों के स्वच्छ वातावरण को छोड़कर लोग महानगरों की तरफ पलायन कर रहे हैं। महानगरों में आने का प्रमुख कारण यह है कि यहां पर शिक्षा, चिकित्सा, उद्योग धन्धों की बहुलता है। इन कारणों से लोग महानगरों की तरफ भाग रहे हैं। वैश्वरीकरण की प्रक्रिया ने लोगों को महानगरों की तरफ आकर्षित किया है। महानगरों में जनसंख्या की इतनी बढ़ोत्तरी हो गयी है कि वहां रहना कठिन हो गया है। जितने साधन है सब कम पड़ते जा रहे हैं। रहने, खाने, पीने, सोने और स्वास्थ्य की समस्याएं बढ़ रही है। गांव खाली होते जा रहे हैं और शहर आबाद होते जा रहे हैं। इसी कारण अनेक समस्याएं महानगरों में बढ़ रही हैं। समस्याओं के बढ़ने के साथ ही साथ अनेक नई–नई बिमारियां भी फैल रही हैं। कैंसर की समस्या, मच्छरों के कारण मलेरिया की समस्या, टी.बी., दमा आदि समस्याएं दिनों–दिन बढ़ती जा रही है। पहले जिन बिमारियों का नाम भी लोग नहीं जानते थे। वे सभी बिमारियां महानगरों में बढ़ रही है। अतः महानगर और गांव दोनों का विकास आवश्यक है। नहीं तो महानगरों की समस्याएं बढती चली जाएगी। गांव से पलायन जारी रहेगा। एक आबाद और दूसरा बर्बाद हो जाएगा। बुनियादी सुविधाएं यदि महानगरों में उपलब्ध नहीं रहेगी तो वहां पर लोगों का जीवनयापन करना कठिन हो जाएगा। महानगरों की तरफ से आबादी को रोकने के लिए सरकार को प्रयास यह करना चाहिए कि गांवों मुें बुनियादी सुविधाओं को बढ़ाया जाये जिससे गांव के लोग महानगरों की तरफ न जावें। शिक्षा, चिकित्सा, रोटी, कपड़ा, मकान, स्वच्छता, उद्योग धन्धे इत्यादि की स्थापना करके लोगों को गांव में ही सुविधाएं उपलब्ध करवायी जावें। यदि गांवों में सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध रहेगी तो महानगरों की तरफ पलायन अपने आप

रूक जाएगा। सड़कों का विकास गांवों में होना चाहिए। उद्योग धन्धों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। गांव के लोगों को जब रोजी रोटी की सुविधा गांव के निकट प्राप्त होगी तो वे शहरों की तरफ नहीं जायेगें।

गांवों का वातावरण स्वच्छ रहता है, बिमारियों की सम्भावना कम रहती है। महानगरों में वाहनों के आवागमन की वजह से निकलने वाला प्रदूषण वहां के वातावरण को दूषित कर देता हैं। महानगरों में श्वांस लेना भी मुश्किल है। आये दिन दुर्घटनाएं होती रहती हैं। दुर्घटनाओं के कारण धन–जन की हानि होती है। महानगरों में सड़कों के किनारे लोग दुकान लगाकर ठेला इत्यादि लगाकर सड़कों को घेरे रहते हैं जिसके कारण आवागमन में बाधा उत्पन्न होती है। वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण इत्यादि का विभत्स रूप महानगरों में दिखलाई पड़ता है। इसी के कारण स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। अनेक लोग झुग्गी झोंपड़ियों में जीवनयापन करने के लिए बाध्य हैं। छोटे–छोटे बच्चे सुबह से शाम तक शहरा कचरा बिनते हुए दिखाई देते हैं। जिन बच्चों को स्कूल में शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए उनका बचपन कूडा करकट इकट्ठा करने और जूठी पत्तलों के चाटने में ही बीत जाता है। बच्चे देश का भविष्य होते हैं। बचपन से ही यदि उन्हें होटलों और शहर का कचरा इकट्ठा करने में लगा दिया जायेगा तो वे देश का कैसे निर्माण कर सकते हैं? अतः महानगरों में भी ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे बच्चों का बचपन न छीना जाये।

प्रत्येक राष्ट्र के नागरिक दो प्रकार के जीवन जीते हैं– शहरी और ग्रामीण दोनों जीवन पद्धतियों का अपना महत्त्व है और दोनों के अपने–अपने तौर तरीके हैं। कोई भी जीवन पद्धति किसी से कम या अधिक नहीं है। दोनों में कुछ अच्छाइयां हैं और कुछ बुराइयां। कमियों को दूर कर अच्छाईयों को अपनाने से दोनों जीवन पद्धतियां सर्वांगीण हो सकती है। एक ग्रामीण व्यक्ति अपने मित्र के निमंत्रण पर शहर में गया। पहली बार वह शहर गया था। उसने शहर की हर गतिविधि का अध्ययन किया। शहर से गांव लौटने पर गांव वालों ने उससे पूछा कि गांव और शहर में क्या अन्तर है? वह बोला गांव के लोग संध्या के समय थके हुए घर आते हैं, पर सुबह उठते हैं तब ताजगी से भरे हुए होते हैं। इसके विपरित शहर के लोग संध्याकाल में ताजगी से भरे रहते हैं किन्तु प्रातःकाल उठते है तब अलसाये रहते हैं। एक व्यक्ति का यह

अनुभव शहरों को की कृत्रिमता और गांवों की सहजता का पूरा चित्र खींच देता है। शहरी लोगों ने अपना बाह्य पर्यावरण और आंतरिक परिवेश दोनों बिन्दुओं पर कृत्रिमता का इतना सघन खोल चढ़ा लिया है कि वास्तविकता की पहचान ही मुश्किल हो गयी है। एक समय था जब लोग गांव छोड़कर शहरों में जाते थे तो उनका मन अपने गांव की यादों में खोया रहता था और गांव के प्रति प्रगाढ़ आकर्षण होता था। किन्तु कुछ लोग शहर में जाकर अपने आपको बड़ा आदमी समझने लगे और उस अंधानुकरण में अच्छे–अच्छे आदमी बह गये। परिणाम यह हुआ कि सबका ध्यान शहरों की तरफ केन्द्रित होने लगा और गांवों के प्रति उपेक्षा का भाव पनपने लगा। महानगरों में सबसे बड़ी समस्या प्रदूषण की है। इसके अतिरिक्त बढ़ती हुई जनसंख्या महानगरों की समस्या को और अधिक बढ़ा रही है।